मुसलमान के हुकूक मुसलमान पर

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

📓 राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

नोट: यहां जो हुकूक बयान हुए है उनमे मुस्लिम और गैर मुस्लिम बराबर है.

१} अबू दाउद की रिवायत का खुलासा.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जो मुसलमान किसी गैर मुस्लिम शहरी पर अत्याचार करेगा या उस्की हक मारी करेगा, या उसपर उस्की ताकात से ज्यादा बोज़ (यानी जिज्या जो मखसूस किस्म का हिफाजती टैक्स होता है) डालेगा या उस्की कोई चीज़ जबरदस्ती ले लेगा तो में अल्लाह की अदालत में मुसलमान के खिलाफ दायर होने वाले मुकद्दमा में उस गैर मुस्लिम शहरी का वकील बनकर खडा हूंगा.

२} बुखारी की रिवायत का खुलासा | रावी इबने उमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने अपने आखिरी हज में (जिस्के बाद आप

दुनिया से चले गये) उम्मत को खिताब करते हुए फरमाया सुनो अल्लाह ने तुम्हारा खून और माल व आबरू मुहतरम बनाया है जिस तरह तुम्हारा ये दिन, ये महीना और ये शहर मुहतरम है.

सुनो क्या मेने तुमको पहुंचा दिया, लोगों ने कहा हां आपने पहुंचा दिया! आपﷺ ने फरमाया ए अल्लाह तू गवाह रहना की मेने उम्मत को संदेश पहुंचा दिया, ये बात आपने तीन बार फरमाई, फिर फरमाया सुनो देखो मेरे बाद काफिर ना बन-जाना की तुम मुसलमान होकर आपस में एक दूसरे की गर्दन मारने लगो.

३} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी जरीर बिन अब्दुल्लाह रदी.

मेने रसूलुल्लाहﷺ के हाथ पर बैअत की नमाज़ कायम करने, जकात देने और हर मुसलमान की खैरख्वाही करने पर.

बैअत के असल मतलब है बेच देना, यानी आदमी जिस्के हाथ पर बैअत करता है असल में वो इस बात का वादा

करता है की में पूरी ज़िन्दगी इस वादे को निबाहूगा.
जरीर बिन अब्दुल्लाह रदी ने रसूलुल्लाहﷺ से तीन बातों का वादा किया, नमाज़ को उस्की तमाम शरतो के साथ अदा करना और जकात देना और तीसरी बात ये की अपने मुसलमान भाईयों के साथ कोई खोट का मामला ना करना उन्के साथ रहमत व शफाकत और खैरख्वाहाना मामला करना. इस हदीस से मालम होता है की मुसलमानो को आपस में किस तरह से रहना चाहिए.

४} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी नुअमान बिन बशीर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की तु मुसल्मानो को आपस में रहम करने, मोहब्बत करने और एक दूसरे की तरफ झुकने में ऐसा देखेगा जैसा की जिस्म का हाल होता है की अगर एक अंग को कोई बीमारी होती है तो शरीर के बाकी अंग बेख्वाबी और बुखार के साथ उस्का साथ देते है.
आपﷺ ने जिस्म की मिसाल देते हुए ये नहीं फरमाया की

मुसलमानो को जिस्म के अंगों की तरह होना चाहिए बल्की मुसलमानो की एक हमेशा रहने वाली सिफत के तौर पर फरमाते है की जब भी तू उन्को देखेगा तो उन्हें एक दूसरे के साथ रहमत व शफाकत से पेश आने वाला ही पाएगा.

५} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू मूसा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की मुसलमान, मुसलमान के लिए इमारत की तरह है जिस्का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को ताकात पहुंचाता है फिर आपने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में मिला कर बताया.

इस हदीस में मुसलमान सोसाईटी की मिसाल एक इमारत से दी गई है की जिस तरह उस्की इंटें एक दूसरे से जुडी होती है उसी तरह मुसलमानो को आपस में चिमटे रहना चाहिए और फिर जिस तरह हर इंट दूसरी इंट को कुव्वत और सहारा देती है उसी तरह उन्हें भी एक दूसरे को सहारा देना

चाहिए, और जिस तरह बिखरी हुई इंटें एक दूसरे से जुडकर मजबूत इमारत की शक्ल अपना लेती है, उसी तरह मुसलमानो की ताकात का राज़ उन्के आपस में जुडने में है अगर वो बिखरी हुई इंटों की तरह रहे तो उन्को हवा का हर झोंका उडाले जा सकता है, और पानी का हर रेला बहा लेजा सकता है, आखिर में इस हकीकत को एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में मिला करके महसूस शक्ल में बयान फरमाया.

६} मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की तकलीफ को अपनी तकलीफ समझता है जिस तरह वो अपनी तकलीफ से तडपता है इसी तरह ये भी तडप उठे और उस्को दूर करने के लिए बेचैन हो जाए.

एक दूसरी हदीस के शब्द ये है तुम्मे से हर एक अपने भाई का आइना है तो अगर उस्को तकलीफ में देखे तो उस्की तकलीफ को दूर कर दे, इसी तरह अगर उस्के, अन्दर कोई

कमजोरी देखता है तो उसे अपनी कमजोरी समझ कर दूर करने की कोशिश करे.

७} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अनस रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की तू अपने भाई की मदद कर चाहे वो ज़ालिम हो या मज़लूम.

तो एक आदमी ने कहा की ए अल्लाह के रसूल! मज़लूम होने की सूरत में तो में उस्की मदद करूंगा, लेकिन उस्के ज़ालिम होने की सूरत में किस तरह मदद करूंगा? आपﷺ ने फरमाया की तू उसे जुल्म करने से रोक दे, यही उस्की मदद करना है.

८} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी इबने उमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की मुसलमान मुसलमान का भाई है ना तो उसपर वो जुल्म करता है और ना उस्को अकेला छोडता है और जो अपने भाई की ज़रूरत पूरी करेगा अल्लाह उस्की ज़रूरत पूरी करेगा और जो शख्स किसी

मुसलमान की परेशानी दूर करेगा अल्लाह कयामत के दिन उस्की परेशानी दूर करेगा और जो शख्स किसी मुसलमान के ऐबों को छुपाएगा अल्लाह कयामत के दिन उस्के ऐबों को छुपाएगा.

हदीस के आखिरी शब्दों का मतलब ये है की अगर नेक मुसलमान कोई गलती कर बैठे तो उस्को लोगों की नज़र से गिराने के लिए जगह-जगह बयान ना करते फिरो, बल्की उस्के ऐब पर पर्दा डालो उस शख्स के विपरीत जो जाहिरी तौर पर अल्लाह के आदेशो को तोडता है तो उस्के ऐबों को छुपाने के बजाए उस्को नंगा करने का हुक्म आपﷺ ने दिया है.

९} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अनस रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कसम है उस जात की जिस्के कब्ज़ा में मेरी जान है, कोई शख्स इमानदार नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिए वो कुछ पसन्द ना करे जो अपने लिए पसन्द करता है.

१०} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू अय्यूब अंसारी रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया आदमी के लिए जाईज नहीं है की वो अपने भाई से तीन रातों से ज्यादा संबंध तोडे रखे की दोनो रास्ते में एक दूसरे से मिलें तो मुंह फेर लें और उन दोनो में बेहतर वो है जो सलाम में पहल करे.

ये बात मुम्किन है की दो मुसलमान किसी वकत किसी बात पर एक दूसरे से नाराज़ या झगडा हो जाए और बातचीत बन्द कर दें लेकिन तीन दिन से ज्यादा उन्को इस हालत पर ना रहना चाहिए और आमतौर पर ऐसा ही होता है की दो आदमियों के बीच अगर तलखी पैदा हो जाए और वो दोनो अल्लाह का कुछ डर रखते हो तो दो तीन दिन गुजरने के बाद उन्के अन्दर एक दूसरे से मिलने की तडप पैदा होने लगती है और आखिर में उन मेसे एक सलाम में पहल करके उस शैतानी तलखी को खत्म कर देता है इसलीये पहल करने वाले की फज़ीलत इस हदीस में भी

बयान हुई है और इस्के अलावा दूसरी हदीसों में भी.

११} बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया अपने आप को बुरे गुमान से बचावो इसलीये की बुरे गुमान के साथ जो बात की जाएंगी वो सब्से ज्यादा झूठी बात होगी, और दूसरे के बारे में जानकारी हासिल करते मत फिरो और ना टोह में लगो और ना आपस में दलाली करो, और ना एक दूसरे से दुश्मनी रखो और ना एक दूसरे की काट में लगो और अल्लाह के बन्दे बनो, आपस में भाई-भाई बन कर ज़िन्दगी गुजारो.

इस हदीस में कुछ शब्द है जिन की तफसील नीचे दी जाती है.

१. 'तहस्सुस' का मतलब है कान लगाना और निगाह लगाना, रसूलुल्लाहﷺ के फरमान का मतलब है की किसी की बातें सुनने के लिए चुपके से छुपकर खडा हो जाना और फिर उस्की बात को उस्के खिलाफ इस्तेमाल करना और उसे लोगों की निगाह में गिराना ईमान और इस्लाम के

खिलाफ बात है.

२. 'तजस्सुस' का मतलब है किसी के ऐब की टोह में लगे रहना की कब उस्से कोई गलती होती है और कब उस्की किसी कमजोरी का उस्को पता चलता है ताकि जल्द ही इस्की इज्ज़त को घटाने के लिए इधर-उधर फैलाने में लग जाए.

३. 'तनाजुश' जो खरीदने और बेचने से ताल्लुक रखता है जिस्के लिए उर्दू का मुनासिब शब्द दलाली, दलाल और व्यापारी में ये बात तैय होती है की दलाल बढ-बढ के बोली बोलेगा और उस्का इरादा उस माल को खरीदने का नहीं होता बल्की सिर्फ ग्राहक को फसाने के लिए वो ऐसा करता है.

४. 'तदाबुर' का मतलब आपस में दुश्मनी करने के भी है और संबंध तोड लेने को भी कहते है.

१२} तिरमेज़ी की रिवायत का खुलासा | रावी इबने उमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ मिम्बर पर तशरीफ लाए और बहुत ही ऊंची आवाज़ से फरमाया ए वो लोगो जो सिर्फ अपनी जुबान से

इस्लाम लाए हो, और ईमान तुम्हारे दिलों में नहीं उतरा है, तुम लोग मुसलमानो को तकलीफ ना पहुंचावो और ना उन्को लज़्ज़ा दिलावो और ना उन्के ऐबों के पीछे पडो.

जो लोग अपने मुसलमान भाई के ऐबों के पीछे पडेंगे तो अल्लाह उन्के ऐब के पीछे पड जाएगा, और जिस शख्स के ऐब के पीछे अल्लाह पड जाएगा उसे रूसवा कर डालेगा, अगरचे वो अपने घर के, अन्दर हो.

मुनाफिकीन सच्चे और पाकीज़ा मुसलमानो को तरह तरह की तकलीफें पहुंचाते और उन्के खानदानी शर्मनाक ऐब जो जाहिलियत के ज़माने में हुए थे उन लोगों के सामने बयान करते, उन्हीं लोगों को रसूलुल्लाहﷺ ने इस हदीस में डांटा है, कुछ दूसरी हदीसों में बयान हुआ है की ये तकरीर करते वकत रसूलुल्लाहﷺ की आवाज़ इतनी उंची हो गई थी की आसपास के घरों तक ये आवाज़ पहुंच गई और औरतों ने सुना.

१३} मुस्लिम की रिवायत का खुलासा |

रावी अबू हुरैरा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर ६ हक है, पूछा गया की ए अल्लाह के रसूल वो क्या है!

आपﷺ ने फरमाया जब तू मुसलमान भाई से मिले तो उस्को सलाम कर, और जब वो तुझे दावत दे तो उस्की दावत कुबूल कर, और जब वो तुझ से खैरख्वाही चाहे तो तू उस्की खैरख्वाही कर, और जब उसे छींक आये और वो अलहमदुलिल्लाह कहे तो तू उस्का जवाब दे, और जब वो बीमार हो तो उस्की इयादत कर, और जब वो मर जाए तो उस्के जनाजे के साथ जा.

सलाम करने का मतलब सिर्फ अस्सलामु अलैकुम का शब्द बोल देना ही नहीं है बल्की ये एक एलान और इकरार है इस बात का की मेरी तरफ से तेरी जान, माल और इज़्ज़त सुरक्षित है में किसी तरीके पर तुझे कोई तकलीफ नहीं पहुंचाऊंगा, और इस बात की दुआ है की अल्लाह तेरे दीन

व ईमान को सुरक्षित रखे और तुझ पर अपनी रहमत उतारे.
तशमीत का मतलब छींकने वाले के लिए भलाई के शब्द कहने के है जैसे यरहमुकल्लाह कहना यानी अल्लाह तुझ पर अपनी रहमत उतारे और तू अल्लाह की फरमाबरदारी करता रहे और तुझ से कोई ऐसी गलती ना हो जाए जिस पर दूसरों को हंसने का मौका मिले.

१४} इबने माजा की रिवायत का खुलासा | रावी उकबा बिन आमिर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ को ये फरमाते हुए सुना की मुसलमान-मुसलमान का भाई है, जो मुसलमान अपने भाई के हाथ कोई चीज़ बेचे और उसमे ऐब हो तो उस्को चाहिए की उस ऐब को उस्से साफ-साफ बयान कर दे, ऐब को छुपाना किसी मुसलमान व्यापारी के लिए जाईज नहीं है.

१५} अबू दाउद की रिवायत का खुलासा |
रावी हज़रत आईशा रदी.

एक आदमी नेक और परहेजगार है, अल्लाह की नाफरमानी नहीं करता, ऐसा आदमी कभी फिसल कर गुनाह में गिर पडे तो उस्की वजह से उसे नज़रो से ना गिरा दो, उस्की बेइज़्ज़ती ना करो, उस्की उस गलती को फैलाते मत फिरो, बल्की माफ कर दो, हां अगर वो ऐसा गुनाह करे जिस की सज़ा शरीअत में मुकर्रर है, जैसे ज़ीना, चोरी वगैरा तो ऐसे गुनाह माफ नहीं किए जाएंगे.

१६} अबू दाउद शराहुस सुन्नाह की रिवायत का खुलासा.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की अल्लाह के बन्दों मेसे कुछ ऐसे लोग है जो ना हुजूर है और ना शहीद, फिर भी अंबिया और शुहदा कयामत के दिन उन्के ओहदे पर रश्क करेगे जो उन्हें अल्लाह के यहां मिलेगा.

लोगों ने कहा की ए अल्लाह के रसूल! ये कौन लोग होगे? आपﷺ ने फरमाया की ये वो लोग होगे जो आपस में एक

दूसरे के रिश्तेदार ना थे और ना आपस में माली लेन-देन करते थे बल्की सिर्फ अल्लाह के दीन की बुनियाद पर एक दूसरे से मोहब्बत करते थे, अल्लाह की कसम उन्के चेहरे नूरानी होगे और उन्के चारों तरफ नूर ही नूर होगा उन्हें कोई डर ना होगा उस वकत जबकी लोग डरे हुए होगे, और ना कोई गम होगा उस वकत जबकी लोग गम में पडे हुए होगे.

और फिर आपने ये आयत पढी 'अला इन्ना औलियाअल्लाहि ला खौफुन अलैहिम वला हुम यहजनून'.

असल हदीस में 'गबित' का शब्द आया है जिस्के मतलब बहुत ज्यादा खुश होने के है, ये शब्द रश्क और हसद के लिए भी इस्तेमाल हआ है यहा पर पहला अर्थ मुराद है.

हदीस का मतलब ये है की जिस तरह एक उस्ताद अपने शागिर्द के ऊंचा मकाम हासिल कर लेने से खुश होता और फख्र महसूस करता है उसी तरह अंबिया और शुहदा जो सब्से ज्यादा ऊंचा मकाम रखते है उन लोगों की कामयाबी पर खुश होगे, ये लोग जिन्का मरतबा बयान हुआ है उन्की

मोहब्बत की बुनियाद सिर्फ दीन पर थी, खूनी रिश्ता और माली लेन-देन ने उन्को आपस में नहीं जोडा था, बल्की इस्लाम और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने के ज़ज्बे ने उन्को एक दूसरे का दोस्त और साथी बनाया था, ऐसे लोगों के लिए दुनिया में फतह व कामयाबी की खुशखबरी दी गई है और आखिरत में हमेशा रहने वाले इनाम की.

सुरे यूनुस की वो आयत जो उपर लिखी गई है वो रसूलुल्लाह ﷺ पर ईमान लाने वालों और दीन की राह में सताए जाने वालों और इमानी ज़िन्दगी के लिए कोशिश करने वालों और जाहिलियत के निजाम से कशमकश करने वालों के बारे में है.

अल्लाह ने फरमाया 'लहुमुल बुशरा फिलहयातिदुनिया व फिल आखिरति' उन्के लिए खुशखबरी है इस ज़िन्दगी में भी और इस्के बाद आने वाली ज़िन्दगी में भी. (सुरे युनुस/64)